अतिथि प्रोफेसर डॉ0 नीरजा अरुण, विभाग के साहित्यक प्रोफेसर डॉ0 मुन्नालाल गुप्ता एवं पीएचडी, एमफिल शोधार्थी

प्रवासी भारतीयों को देश के करीब लाने में मीडिया की भूमिका अहम : नीरजा

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है, यहां भेष-भूषा, खान-पान, रहन-सहन अलग-अलग हो सकते हैं पर राष्ट्रहित के स्तर पर सभी एक है। भारत विश्व गुरु रहा है इसकी संस्कृति आज भी प्रासंगिक है। इसका असर अपने देशों में तो देखने को मिलता ही है लेकिन इसके प्रभाव विदेशों में जीता-जागता उदाहरण के रूप में विश्व के कई देशों में देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति को जीवंत करने में भारत के प्रवासी भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान है, भारत से प्रवासिन होकर मरीशस, गुयाना, फिजी, जापान, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, चीन, रूस, साउदी-अरब, इंग्लैंड जैसे देशों में गए भारतीय जाकर अपनी अस्मिता तथा सांस्कृतिक पहचान को बचाए हुये हैं। उन्हें भारत देश और संस्कृति से अगाध प्रेम व लगाव है, वे आज भी रामायण, महाभारत, भजन-कीर्तन, कुरान, धार्मिक प्रवचन आदि को वे विशेष महत्व देते है, इसमें उनकी श्रद्धा व आस्था कायम है। भारतीय त्योहार जैसे-दीपावली, होली, दुर्गापूजा आदि को सैंडविच कल्चर के माध्यम से मनाते हैं। वे भारत को अपना मूल देश मानते हैं, उनके दिल में भारत के प्रति अपनत्व का भाव है। भले ही उन्हें किसी भी देश की नागरिकता मिल गई हो, लेकिन उनके दिल और दिमाग में भारतीयता की गूंज कायम है। वे अपने भारत के लोगों को अपना परिवार मानते है। वे भारत को कई प्रकार से मदद भी करते हैं, आर्थिक तंगी के समय आर्थिक सहायता प्रदान कर भारत को मजबूती प्रदान की है। वे अपने परिवार से अलग होकर अनुबंधित श्रमिक, डॉक्टर, इंजीनियर शिक्षाविद, वैज्ञानिक, उधयोगपति, जनप्रतिनिधि के रूप में अपने को विश्व के कई देशों में स्थापित कर लिए है, वे प्रवासी भारतीय कहलाते हैं। आज उनको मातृदेश देश भारत से जोड़ने तथा संस्कृति रीति रिवाज को मजबूती प्रदान कर संबंध स्थापित करने तथा उनके बारे में अध्ययन के लिए भारत के कई विश्वविद्यालयों में डायस्पोरा विभाग की स्थापना की गई है, जहां प्रवासी भारतीय एवं प्रवसन से संबन्धित अध्ययन किया जा रहा है। इसका जीती जागती मिशाल महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के प्रवासन, डायस्पोरा एवं ट्रांसनेशनल सांस्कृतिक विभाग की स्थापना की गई है, जो अध्ययन के साथ-साथ शोधार्थियों को विशेषज्ञ से सीधे संवाद विशेष व्याख्यान के माध्यम से स्थापित करता है। इस व्याख्यान के तहत वर्धा में आमंत्रित अतिथि प्रो0 डॉ नीरजा अरुण गुप्ता का व्याख्यान आयोजन किया गया जिसमें एमफिल, पीएचडी के शोधार्थी तथा विभाग के सहायक प्रो0 डॉ0 राजीव रंजन राय एवं डॉ मुन्ना लाल गुप्ता की विशेष रूप से उपस्थित रही और छात्रों ने खुलकर कई प्रश्नों के उत्तर भी जानने का प्रयास किया। इसी संदर्भ में प्रस्तुत है

डॉ0 नीरजा अरुण से संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के एमफिल के शोधार्थी बिमलेश कुमार से विशेष बातचीत का अंश

बिमलेश : महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा में आपका स्वागत है?

डॉ0 नीरजा अरुण : जी धन्यवाद!

बिमलेश : आपके विचार से डायस्पोरा शब्द क्या है?

डॉ0 नीरजा अरुण : डायस्पोरा शब्द डियो स्पीन से बना है जिसका मूल अर्थ बीजों को बोना, उभरना, अंकुरना आदि से है जो भारत से प्रवासन हुये लोगों के लिए उपयोग किया जाता है। जो प्राचीन समय में धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए महात्मा बुद्ध, सम्राट अशोक अंग्रेजों के शासन काल में अनुबंधित श्रमिक के रूप में आधुनिक दौर में डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद, कानूनी सलाहकार, राजदूत, उद्योगपति आदि के रूप में भारत से प्रवसन हुआ जो हमारे अपने लोगों के लिए डायस्पोरा शब्द का उपयोग किया जाता है।

बिमलेश : डायस्पोरा में शोध किस प्रकार हो सकता है?

डॉ0 नीरजा अरुण : डायस्पोरा में कई प्रकार से शोध हो सकता है जिसमें विभिन्न पहलुओं को लेकर कार्य हो सकता है, जैसे भारतीय डायस्पोरा पर, होस्ट सोसाइटी को लेकर भारतीय संस्कृति पर, सैंडविच कल्चर पर, डायस्पोरा फिल्मों पर, साहित्य ग्रन्थों पर, राजनीतिक स्थिति आदि पर कई महत्वपूर्ण शोध कार्य हो सकते हैं।

बिमलेश : विदेशों में भारतीय संस्कृति को बचाने में परंपरागत मीडिया मीडिया किस प्रकार की भूमिका निभा रही है।

डॉ0 नीरजा अरुण: परंपरागत मीडिया में फोक मीडिया आता है, पर्व त्योहार, प्रवचन, रामायण, महाभारत के पाठ, लोकनृत्य, गीत-संगीत आदि हैं। जो सीधे तौर पर भारतीय संस्कृति को संरक्षित करती है। नाटक, रामलीला, कृष्णलीला, विदेशिया आदि आज भी व्यापक रूप से भारतीय सस्कृति को बचाने में सकारात्मक भूमिका निभा रही है।

बिमलेश कुमार : प्रिंट मीडिया की क्या भूमिका है?

डॉ0 नीरजा अरुण : प्रिंट मीडिया की मांग को देखते हुये अब प्रिंट मीडिया ऑनलाइन अखबार, पत्रिका का रूप धरण कर चुकी हैं। इसके माध्यम से समय और पैसे की भी बचत होती है जिसके माध्यम से व्यापक संचार किया जाता है, जो भारत के खबरों को विशेष रूप से हिन्दी, गुजराती, तमिल, पंजाबी, भोजपुरी में प्रकाशित कर अपने को भारतीय होने का एहसास कराती हैं।

बिमलेश कुमार : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका क्या है?

डॉ0 नीरजा अरुण : आज बदलते हुये परिवेश में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का क्षेत्र व्यापक हो गया है। यह संचार का तीव्र माध्यम माना जा रहा है, जिसके माध्यम से बड़े स्तर पर संचार किया जा सकता है। इसमें रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, धारावाहिक, विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के रेडियो के चैनल, बीबीसी तथा टेलीविजन के चैनल स्टार टीवी, सोनी, सीएनएन टेलीविजन आदि की मुख्य भूमिका है जो भारतीय खबरों एवं संस्कृति से अपने श्रोता और दर्शकों को रू-ब-रू करा रही है साथ ही भारत से जोड़ने में डायस्पोरा फिल्में भी अहम भूमिका निभा रही हैं जिसमें भोजपुरी, तमिल, गुजराती, पंजाबी, हिन्दी आदि फिल्में शामिल हैं।

बिमलेश कुमार : वेब मीडिया की क्या भूमिका है?

डॉ नीरजा अरुण : आधुनिक भाग-दौड़ की जिंदगी में वेब मीडिया काफी बेहतर माध्यम के रूप में उपलब्ध है जो काफी समय की बचत कर कम समय में देश-विदेश के खबरों से सीधा अपने दर्शकों को जोड़ती है। इसमें फेसबुक एई-मेल, ब्लॉग, ऑनलाइन टीवी, यू-ट्यूब आदि की भूमिका महत्वपूर्ण है जो भारत से सीधे स्तर पर संवाद स्थापित करती है। यह काफी प्रभावी माध्यम है जो डायस्पोरा को अपने मातृदेश के करीब लाने में मुख्य भूमिका निभा रही है जो मीडिया समाज को बैलेंस करने का कार्य करती है।

बिमलेश कुमार : जब भारत में आर्थिक तंगी की समस्या हुई है, तो उस समय प्रवासी भारतीय लोगों ने प्रमुख रूप से सहयोग किया है। भारत के समवेशी विकास हेतु प्रवासी भारतीय लोगों से आत्मीय रूप से जुड़ने के लिए भारत सरकार क्या कदम उठा रही है?

डॉ0 नीरजा अरुण : इसके लिए भारत सरकार की तरफ से प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन साल में दो बार किया जाता है। एक बार भारत में दूसरी बार विदेश में चार दिन का आयोजन होता है इसमें हर देश के समृद्ध लोगों का आगमन होता है जिसमें हर स्टेट की अपनी समस्या होती है, वह अपनी जरूरत को बताता है तथा राजदूतों समेत कई संगठनों के माध्यम से प्रवासी भारतीय लोगों को वैचारिक एवं आर्थिक संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती है।

भारत देश और संस्कृति से अगाध प्रेम व लगाव है, वे आज भी रामायण, महाभारत, भजन-कीर्तन, कुरान, धार्मिक प्रवचन आदि को वे विशेष महत्व देते है, इसमें उनकी श्रद्धा व आस्था कायम है। भारतीय त्योहार जैसे- दीपावली, होली, दुर्गापूजा आदि को सैंडविच कल्चर के माध्यम से मनाते हैं। वे भारत को अपना मूल देश मानते है, उनके दिल में भारत के प्रति अपनत्व का भाव है।

बिमलेश कुमार : हमारे देश के फोक सांग तथा फोक संस्कृति बचाने में किस प्रकार की सरकार की भूमिका होनी चाहिए?

डॉ0 नीरजा अरुण : फोक संस्कृति को बचाने के लिए सरकार का सहयोग महत्वपूर्ण होता है जिसमें सरकार को सहयोग करना चाहिए। केवल लोक संस्थान इन्हें नहीं बचा सकते हैं, इसके लिए शोधार्थी विरासत और लोक संस्कृति के महत्व के बारे में अध्ययन कर समस्या डाटा, आवश्यक विषयवस्तु, निदान आदि के माध्यम से संबंध मंत्रलाय को सौंप कर सरकार का ध्यान दिला सकते है ताकि सरकार के नीति निर्माण में यह सहयोग प्रदान करे और फोक संस्कृति को भी संरक्षित किया जा सके।